

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2009

प्रश्न पत्र-II

समय : 3 घन्टे

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य हैं। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

भाग-I (षडबल)

1. निम्न कुण्डली के लिए उच्च बल व केन्द्र बल की गणना करें :-
लग्न कर्क 19:37, सूर्य मकर 20:06, चन्द्र मकर 29:17,
मंगल कन्या 04:32, बुध मकर 05:18, बृहस्पति मेष 23:28, शुक्र मकर
03:07, शनि कुम्भ 11:21, राहु वृषभ 28:25 ।
2. निम्न का उत्तर दें :-
 - i) 110 अंश के शनि का उच्च बल कितना होगा?
 - ii) सिंह में वर्गोत्तम गुरु का युग्मयुग्म बल कितना होगा?
 - iii) आय भाव में स्थित चन्द्रमा को कितना केन्द्र बल प्राप्त होगा?
 - iv) कन्या राशि में 24° पर स्थित बुध को कितना द्रेष्काण बल मिलेगा?
 - v) मध्य रात्रि में जन्में जातक के मीन राशि स्थित बुध को कितना नत्तोनत बल प्राप्त होगा?
 - vi) यदि जन्म 16 वें होरा में हो तो बृहस्पति को कितना होरा बल मिलेगा?
 - vii) भचक्र के अधिकतम उत्तर व दक्षिण बिन्दुओं पर किस ग्रह को सदा अधिकतम आयन बल प्राप्त होता है?
 - viii) बृहस्पति को शिर्षोच्च बिन्दु पर कितना चेष्टा बल मिलेगा?
 - ix) चन्द्रमा को कितना नैसर्गिक बल प्राप्त होता है?
 - x) यदि द्वितीय भाव मध्य कन्या में है तो इस भाव को कितना भाव बल प्राप्त होगा?

3. प्रश्न 1 में दिए जन्मांग के लिए पक्ष बल की गणना करें।

4. किसी जन्मांग में विभिन्न ग्रहों द्वारा प्राप्त षडबल इस प्रकार हैं :-

ग्रह	षडबल	ग्रह	षडबल
सूर्य	468.5	बृहस्पति	609.9
चन्द्र	381.4	शुक्र	358.2
मंगल	486.6	शनि	357.2
बुध	444.4		

i) उपरोक्त सूचना के आधार पर सभी ग्रहों के उनके बल के अनुसार क्रमवार लिखें।

ii) इष्ट फल व कष्ट बल का प्रयोग लिखें।

5. संक्षिप्त में लिखें :-

i) अयन बल

ii) नैसर्गिक बल

iii) चेष्टा बल

भाग-II (भाव निर्णय)

6. i) दुःख स्थानों प विस्तार से चर्चा करें।
ii) विपरीत राज योग समझाएं।
7. निम्न जातक के लिए दशांश का प्रयोग करते हुए उनके कार्य क्षेत्र पर प्रकाश डालें।
लग्न मिथुन 26:54, सूर्य मीन 08:37, चन्द्र सिंह 17:44, मंगल वृष 26:46, बुध मीन 18:56, गुरु (व) वृश्चिक 08:40, शुक्र मेष 09:36, शनि धनु 13:17, राहु कन्या 19:47 (23.03.1959, 12:37, गोरखपुर)
शेष दशा - शुक्र 13 व 4 मा 22 दि.
8. सप्ताशं व द्वादशांश का प्र. 7 की कुण्डली के आधार पर उपयोग बताएं।
9. टिप्पणी लिखें :-
 - i) भाव निर्णय में स्थायी कारको का प्रयोग
 - ii) क्रूर ग्रहों का छटे भाव में प्रभाव
 - iii) बृहस्पति का नवम भाव स्थिति का प्रभाव यदि वह उच्च, नीच, मूल या अपनी राशि में हों।
10. i) नीच भंग राज योग समझाएं।
ii) निम्न घटनाएं कुण्डली में कैसे देखेंगे?
क. दुर्घटनाएं ख. संतान का अभाव